

Śāradīyapūjāpaśādhā

I 8012

Handwritten text in Devanagari script, likely a title or description of the manuscript's content, including the word 'Śāradīyapūjāpaśādhā'.

धर्मक
पञ्चिमा
नगना
दगवा
विं
भीरु
पञ्चगान
नायकि
हेनवी दगनाहि

Sakadigopāya parikṣat

ASHA ARCHIVES
2.108 I

॥ किमयी ॥ सोऽसर्वेऽथर्व्यप्रदायिनी ॥ सोऽसर्वज्ञानमयी ॥ सोऽसर्व
 वद्याधिविनाशिनी ॥ सोऽसर्वधनस्वनूपिणी ॥ सोऽसर्वपापहना
 ॥ सोऽसर्वानन्दमयी ॥ सोऽसर्वनदास्वनूपिणी ॥ सोऽसर्वपित
 रुलप्रदा ॥ ॥ मूलना ॥ सर्वनदाकनाकदृष्टानचक्रं पिपूनामा
 सिनीचक्रनायिका धिष्ठाणी महाकृष्णमूडा धिदवता प्राकाम्यसि
 द्विप्रय धिदवता वैषूवदक्षनि सर्वज्ञाद्यादद्यानिर्हमेयागिन्यः

कां महाकृष्ण (मूडादक्षयि ॥ अचमनं ॥ अर्पणं

समूडा ॐ यादि ॥ तर्पणं ॥ ॐ ॥ त्रिं ॥ ॐ ॥ मूकक्षयपालनज
 ना ॐ ॥ धनं ॐ ॥ मां पूजां विस्मृत्तं ॥ ॐ ॥ अन्नं नवलिदा ॥ नवद
 वग्निसमर्चितं ॥ ॐ ॥ नाजना ॐ ॥ धनादेवाभे प्रसीदतु सर्वदा ॥ ॥ ॐ ॥
 धूपदीपनेवद्यादि ॥ ॥ उप ॥ ॐ ॥ श्री ॥ ॐ ॥ मां ॥ सर्वज्ञा सर्व
 ॥ किं ॥ सर्वेऽथर्व्यरुलप्रदा ॥ सर्वज्ञानमयी देवी सर्वव्याधिवि
 नाशिनी ॥ सर्वधनस्वनूयाच सर्वपापहना तथा ॥ सर्वानन्द
 सर्वनदाकनस्या ॐ पिपूनामा सिनीयेति ॥ यथा ॥ किं उप पूजां दत्तं

मयीदवीसर्वनदात्तवृषिभी॥तथेवहिमहादवीसर्वपिण्डरुलप
दा॥भूक्तद्विभनचक्राथि सर्वनदाकनाद्वय॥षष्ठ्यवननसंयुक्त
नमस्त्रिपुनमासिनी॥ ॥विक्राप्यअर्ककर्मसमाय॥ ॥ह
तेगहानदीयषष्ठासर्वनदाकननद्विभनचक्राधिष्ठात्री
शिपूनामासिनीदद्यच्चनविधेगत्सर्वविधिप्रतिपूर्वमम्भु॥
ॐ तिषष्ठीकथविधि॥ ॥अथसफम्यामधिवासनविधि

निवासक आगच्छ

॥यथापद्युक्तक्रमेणपीठपूर्णाविधय॥क्रीसर्वभागहनाद्यानच
क्रासनायनमे॥ध्यान॥ध्यायेत्सर्वभागहनाद्यानचक्रमनाहन॥
कन्दपृष्ठाप्रतीकाभिहिमम्भुवन्द्यसी॥चन्द्रनखाजटाशृङ्गा
विभजोमुद्रुवाससी॥नानासंकोनसूतगभीपीनान्नगघनसुनी
पाभक्तुभरुयंपाण्डुतीगिपुनसिद्धिदी॥ ॥आवाहनी॥
शिपूनासिद्धिसंयुक्तवर्गिन्याद्या॥समन्वितासर्वभागहनेचक्र
आभीष्टपूजयाम्याही॥ ॥क्रीष्णासिद्धिप्राप्तयेपाद्यन
तिष्ठता

वधालसां

शुद्धि स्वां

म॥ ॥ अवमर्घ्यवमनीयस्नानं ॥ नक्तचन्दनः वन्धूकपूष्यः स्वर्णजा
तीपूष्यमालाः महाधूपः नक्तवर्णिकादीपः नक्तादननेवद्यः तथु
लीयपक्वान्नः हनिधर्मासः प्रीहधर्मासः नक्तपाण्डुः कदलीरुजः
कस्तुरीवीहिः वीजनाचनोषधीः पूगमुखशुद्धिः ताम्रदन्दिनी
॥ १ ॥ अथशुद्धिः ॥ द्वाष्टीसी ४ श्रीपिप्रासिद्धाष्टीपापू ॥ ३ ॥ ॥
ततश्चावननक्षत्रपूजा ॥ त्वं वजिनीवाग्देवताष्टीपापू ॥ केंद्राष्टीका
पादकादानं २ ॥ अ॥

हिनः निमिगदविपाइकुनलमूद्रासं॥ गृहगणिपूनासिद्धिमयारुक्कनिवदिता
मं० वनीवा० ॥ चं० अन्वीमीहिनीवा॥ ८० अं० विमंसावा॥ गं० अं० जि
नू० वा॥ पं० अं० ऊर्यनीवा॥ यं० ४ मां० सं० वं० वनीवा॥ १०० ॥ ४
००० कीरिनीवा॥ मूलनसर्वं नू० नागहनाद्यानचक्रणिपू
००० नासिद्धा नू० चक्रनायिकाधिष्ठात्रीखचनीमूद्राधिदव
ना० उकि सिद्धिप्रयधिदवतावकासं० पं० दं० निवनी० न्याद्याष्ट
कनहस्या० नहस्ययागिन्य० ४ समूद्रा० ००० यादि॥ निष्ठात्मन

अलीकृति

त्वाय स्वाह गिरिर्ष्यसी ॥ ॐ खचनी मूदान्दर्शय ॥ ॥ ॐ गिरिर्ष्य
 म् ॥ ॥ तत्ता धिवास न संकल्प्य ॥ ॐ अष्टहयादि ॥ ममादि
 सकलपनिवाना जीय ॥ ॐ कुरुते पापार्थं भवेदीया चर्चना
 म् ॥ ॐ गम धिवास न कर्माहि कर्माणि ॥ ॥ ॐ गिरिर्ष्य ॥ ॥
 सर्वपापानादाय विधात्सादनं ॥ ॐ वताला धिपिभ धिनाक सा
 धिस्नीहपा ॥ अपसर्प्य नु न सर्वदया अमुक्षता ठिता ॥ ॥

ॐ गिरि विघ्नान्सार्य दद्यात्पु निमायाम्बाय नुवा दवीम्बा धय ॥
 मूलन ॥ ॐ गवति महा धिपूत सून्य निउतिव शनिर्झां ऊहि २ प
 ति वृक्ष स्व २ मम गं फूल हन २ पागय २ स्वाहा ॥ ॥ तत्ता सु
 गन्धिर्हो लह निडा कूक म् ॥ ग्रीख लु क पून क रूनी ॥ ॐ
 नृति दद्यात् ॐ ॐ उद्वर्तन ॥ ॐ श्री सो ४ ॐ गवति गन्धवान् ॥ ॐ
 दा ॥ ॥ तत्ता विल्व पत्रे ॥ अपा पूष्य कनवीन अपना ठिता ॥ ॐ

ॐ लोकादद्यामूर्द्धिदद्या॥ ॐ डीं श्रीं स्वाहा॥ ॥ गतासु दिशु वलि
 दद्या॥ पूर्वदिशि भर्त॥ सुं हंगय जषामाषरकवलिर्नमः॥ जव
 ॥ जिं गंगपतरं॥ ॐ दिक्कालयः॥ ॐ ग्रहयः॥ सुं मातृयः॥
 वां वट्टकाय॥ श्रीं कण्ठपासयः॥ इन्द्रानपासयः॥ कुं यि
 गिनीयः॥ ॥ ॐ तिवलिदत्ता॥ सीहानमूद्रयावलिं॥ विसृज्य
 लिख्यनेपथिपं॥ ॥ ततः॥ कुमानीसुरमादाय देव्याः॥ कनव

सर्वत्रागहन स्यात्क सिद्धांत विपुत्रपत्र॥ यथा॥ किं जपं पूजां कृतं दविगृह
 सूर्य॥ ॐ हव या तं जमं हर्गं सर्वपातकनाशिनं॥ सर्वकामप्रदं ह
 ॐ नवा॥ ॐ धनयाम्याह॥ ॐ तिवसू यित्वा॥ धूपदीपनेव यानि स
 मर्प्य॥ ॥ जपं॥ डीं श्रीं सोः॥ ॐ ॥ सां॥ वां॥ देवीवणिनी नो मि
 निर्युं कामं धनीतथा॥ माहिनी विमला देवी अत्र जपनीतथा॥
 सर्वं धनीनमाप्सुर्यं कीर्तिनीपत्रमं धनी॥ सर्वत्रागहनसूत्र
 वक्तुं निर्युं गदाधिपा॥ सफावनं संपूजां सिद्धाया विपुत्रान्नम

वन्दनागत्र कर्पुत्र कस्तूरी कर्पूरं धी
 बालपीसी धानमसीउभीनेत्रधियासयथ॥
 श्रीं डीं १५५ दमनव॥

वल्लकत्रैत्रधियासयथ॥ चन्दनादि १० देवी नक्षत्रं चतुर्दिशु चतुर्गुणानि पूजयथ॥ ५

४॥ ॥ॐ॥ गिम्बुत्वा ॥ पदाम् ॥ ॐ॥ गिदिनकृत्य ॥ ॥ अथर्द्धमर्द्धमि
 नर्द्धदवी चतुर्दिक्कदीपार्पिद्वात्यवध ॥ अस्तिनाप्रार्थय ॥ अवेनाव
 दस्यवध ॥ अथयनामस्यानूयहायच ॥ अकासेवन्न ॥ अवाध ॥ अदद्या
 ह्ययिहत्तपूना ॥ अहमप्याधित ॥ अद्यसाया ॥ अवाधयाम्याह ॥ अजी
 नगिरवन्नजागाधीचक्र ॥ अिपूनास्त्य ॥ अतथासिमयागूढ ॥ अष्टपू ॥ अ
 धी ॥ अिपूनास्त्य ॥ ॥ॐ॥ गिस्त्रिपार्थगीगवाद्यादिहिनाजेजाग

नमाकुमात्री स्नानासुवाहिनी

ममसकलपनिवाना ॥ अगतजन्मकृतपापाप नूयष्टसहस्रा ॥ अवाचिन्नदवीसाकनिवास
 नर्द्ध ॥ अततक्तानदीयसफम्या ॥ सर्वनागहना ॥ अष्टानचवार्धिसुपरीधी
 अिपूनासिद्धाचनमूलदद्याधिवासनकि ॥ अततसर्वविधिपनिपूर्जम
 सु ॥ ॥ॐ॥ गिस्त्रिपार्थगीगवाद्यादिहिनाजेजाग
 म्यामहास्त्रानविधि ॥ ॥ अकादीसंकल्पकृत्य ॥ अथय्यादि
 पूर्ववा ॥ अन्नधीमहाअिपूनासुन्दरीदद्या ॥ महास्त्रानकम्महि
 कनिध ॥ पा ॥ अयाममृष्यादिन्यासकृत्वाकल ॥ अमकमादाय

होमीधीवक्रमुक्त्यगजिबत्वात्रिशसोवाकाकल ॥ अमृष्यापथि

॥

दधीप्रार्थय ॥ पादकंपत्रिधयाश्रितिपूजयन्निर्मितं ॥ स्नानामनुपमाया हि स्नानार्थं याम्यदिशतः ॥ ६४ ॥ यन्ननस्नानमनुपमानीयर्दगधवर्नदलोस्नानवर्षिपत्रिधया ॥

संगमादकनिधायकूमादिरिः सुवासयन्मूलमकुंष ॥ ५५ ॥ धपि
त्वांस्त्रापय ॥ ५६ ॥ सीताचानेकनन्दाचने कुरुदोषद्वती ॥ ५७ ॥ रुद्ररुद्राक
पूवक्षपयापूनिर्मदातथा ॥ गापीतीमनथीसिपाविगस्तेनाव
तीतथा ॥ ५८ ॥ दावनीपिपा ॥ ५९ ॥ गडुः सिधुनवच ॥ चर्मव्यती
चकावनीगाप्रपथीमहनदी ॥ कनकोयावाद्रुदाचसानावेणुवनी
तथा ॥ ६० ॥ दविकाहेनव ॥ ६१ ॥ काका ॥ ६२ ॥ मती वात्यसावती ॥ ६३ ॥ आगुपीरान
तीगम्मायमूनाचसनस्वती ॥ ६४ ॥ सनपूगकुकीचापि ॥ ६५ ॥ गमीच

॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

वाग्वतीचमस्तेकुंसातथेवनृत्तिनीचया ॥

कोलिकी ॥ १०१ ॥ रागवतीचपागोलेस्व ॥ १०२ ॥ मन्दाकिनीतथा ॥ १०३ ॥ उताध
न्याधयानधाहासिगाया ॥ १०४ ॥ ननगा ॥ १०५ ॥ देवखातानितीर्थनिकूपा
निर्जनसीक्लिता ॥ १०६ ॥ सनीसिसिधव ॥ १०७ ॥ पिरीदायचरुतलो ॥ १०८ ॥ स
वैलामरिषि ॥ १०९ ॥ कुदेवदानवमर्दिनी ॥ ११० ॥ सुनास्त्वामरिषि ॥ १११ ॥ कु
वद्रविष्मद ॥ ११२ ॥ वासुदेवाजगन्नाथतथा ॥ ११३ ॥ कर्ष ॥ ११४ ॥ पु
११५ ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ ११८ ॥ ११९ ॥ १२० ॥ १२१ ॥ १२२ ॥ १२३ ॥ १२४ ॥ १२५ ॥ १२६ ॥ १२७ ॥ १२८ ॥ १२९ ॥ १३० ॥ १३१ ॥ १३२ ॥ १३३ ॥ १३४ ॥ १३५ ॥ १३६ ॥ १३७ ॥ १३८ ॥ १३९ ॥ १४० ॥ १४१ ॥ १४२ ॥ १४३ ॥ १४४ ॥ १४५ ॥ १४६ ॥ १४७ ॥ १४८ ॥ १४९ ॥ १५० ॥

हि विष्णुर्धर्मकामार्थसिद्धयः॥ सिन्धुर्देववल्गुः॥ शायकदातु
 विविश्रताः॥ सर्वस्मिन्मनसा हत्वा ह मन्त्रेऽस्त्रापयन्तु ग॥ तद्दुकाया
 ध्वंशनाय भाग्यालुतल्लवा सिने॥ स्त्रापयन्तु जगद्वाणी ह मन्त्रिस्त्वा
 सुवासिने॥ १ ॥ ततोऽव्यहदनस्त्रानि॥ ततोऽदीर्घादकन॥ उंस
 ध्वंशामधिपादवल्गुः॥ नानामनामतः॥ भूतया जिर्महादवल्गुः
 स्त्रापयन्तु॥ २ ॥ गङ्गाजलं॥ मन्दाकिन्याम्बुयद्वा नि सर्व

पापहर्तुः ॥ स्वर्गसागः समुद्रः स्वर्गहवतु मनता ॥ ३ ॥ उषादकन ॥ उ
षासुखस्यार्कनं ॥ अतिष्ठत्तुसमपरी ॥ मसापहानकनमयं नृनस्त्रानेस
माचन ॥ ४ ॥ चतुःसमासातिताउभन ॥ गन्धर्वः ॥ अहर्नयेव ॥ गीत
सुमनाहर्न ॥ सर्वपापहर्तुः तर्हस्त्रानायकल्पता ॥ ५ ॥ गीतसु
सेन ॥ पृथ्वीपविर्गस्वच्छ ॥ गीतसुस्वाइयजुर्ह ॥ स्त्रानायकल्पता
तर्हस्त्रयेव ध्रुमः भक्तयः ॥ ६ ॥ ततापः ॥ गव्यनस्त्रानार्थहस्ता ॥ ७ ॥

तिनापार्थयः ॥ गवः पविर्गान्नद्यान् वाविध्वस्यमातन ॥ ८ ॥ ग
वाधनाः अक्षयः ॥ गवः सर्वप्रतिष्ठितः ॥ तदस्यसेते ॥ पक्ष्म
दीर्घस्त्रापयाम्यह ॥ ९ ॥ तिस्रपाथः ॥ आदोः ॥ गमूः ॥ गवामूः
पृथ्वीनसर्वाद्यः पविर्गान्नद्यान् ॥ स्त्रापयामिजगद्गुणीं पूजायुद्ध
सिद्धयः ॥ १० ॥ गमयः ॥ पविर्गान्नद्यान् ॥ तर्हस्त्रयेव ध्रुमः भक्तयः ॥
गमयः सर्वपापघ्नः नृनस्त्रापयाम्यह ॥ ११ ॥ दधि ॥ यद्भवामह

सैहर्गहविष४कानर्जहितत॥दधितरुम्भसावस्थकान्धायरुव
 त्विदं॥२॥इग्ध॥यद्भुक्तियोक्तापार्थयस्मिन्सर्वप्रतिष्ठित४॥
 पयसातादृधनत्वास्त्रापयामिपन्नध्वनी॥१०॥धृत॥यद्दामसा
 धकत्वेनप्रथितंनिगमादिषू॥यच्चाप्यग्निमूर्धनेवजुभूतसक
 ला४सूना४॥यस्मात्प्रविर्णनेवास्मिन्सर्वीर्यकनक्षय७॥तन्नत्वा
 स्त्रापयाम्यद्यगवेनहविषध्वनि॥११॥पंचगव्यानेकीद्वय॥यस्मा

[illegible]

विपुलमूमापतिपत्रध्वनी॥ तद् ध्वापयामि त्वं पुकिमुक्त्तर्थसि
द्वय॥ १७॥ मधु॥ मधुमदिकसं हर्तुं देवपितृ प्रभादकं॥ पोपोय
नाभना॥ र्थत्वमेधुना स्नापयाम्यहं॥ १८॥ द्युत॥ कपिलाया च तं
पुष्टं तद रावय इह वी॥ अति ध्रुवमवाफ र्थं द्युतन स्नापयाम्य
हं॥ १९॥ अर्कना॥ नानेक न स सं हर्तुं अर्कनो स्वाइ गीत स॥ स्नानं
पुकसि तं पुष्टं गृहा ज विपुलं ध्वनि॥ २०॥ पूषादकन॥ जे की से

सी॥ श्रीं विपुषादकन धीमहा विपुल सुन्दरीं स्नापयामि॥ २१॥ क
॥ अदक॥ उं जे की सी॥ रुद्र स्वाहा क॥ अदकन धी॥ २२॥ रु सो
दकन॥ आ सा हे रुठ नमः॥ स्वाहा रु सो दकन धी॥ २३॥ ॐ कू
दकन॥ जे वागी ध्वनि विमह की काम ध्वनि धीमहि॥ सी सु
ने॥ अकि॥ अवा दया॥ ॐ कू दकन धी॥ २४॥ नानी क सी
दक॥ धीं जी जे की सी॥ रुद्र स्वाहा नानी क सी दकन धी॥ २५॥

हृदि नक्तप्रमृत्तिका मिश्रिता दकन ॥ जौं जौं दूँ दूँ जौं रूट हृदि
नक्तप्रमृत्तिका मिश्रिता दकन श्री ० ॥ २४ ॥ गूकन दनो हृत्तमृ
न्निश्रित जसन ॥ कौं कौं कौं कौं कौं हृत्तमृन्निश्रि
त जसन श्री ० ॥ २५ ॥ सूवर्ण दक ॥ दूँ
जसूवर्ण दकन श्री ० ॥ २६ ॥ नत्ता दक
॥ सूँ ज नत्ता दकन श्री ० ॥ सर्वा विधी जसन सान ॥ ॥

ॐ असर्वविषयी जलनशी ॥ २८ ॥ सहस्रधनाय नमः ॥ कुं अस
हस्रधनाय शी ॥ २९ ॥ कस्तूरी हनिता मिश्रित जल ॥ जल
न ॥ कुं अकस्तूरी हनिता मिश्रित जलनशी ॥ ३० ॥ क
पूनशी ॥ कुं खडु मिश्रित जलन ॥ कुं सागना ॥ सनित ॥ स वा ॥
से मन्त्रा ॥ तानका रुध ॥ मि सुका ॥ घ ड्ड काटी निमी ॥ ध निट पि
वीतल ॥ दूपा ॥ सन ॥ प्रथव ॥ देवरवागा ॥ ध गुरुका ॥ कृष्ण

निर्मनावाया यावक्त ध्वजलासया ॥ तव अकसूना सपिर्दिधि ईन्ध
 जलात्मका ॥ समूदा ॥ सफतद्दीपायच सफपकीर्तिता ॥ जम्बूपुद्ग
 कृष्णकेशु मकमसिपूष्कला ॥ अतिषिष्कुरु सर्वेषामेक
 पाठवणीकृता ॥ ३१ ॥ कृकृमादक ॥ अस्यादधपूना अनिव्यासना
 कानियानिहि ॥ यानिवापपूना अनिस्त्रापयनुपनध्वनी ॥ ३२
 ॥ गीताचनादक ॥ महर्षिहि ॥ प्रजीतानि धर्ममस्तु ॥ जियानिच

अरुन्मिषिता कृता जियानिचा कानि महध्वनमूखा द्विव ॥ स्त्रापयनुजगद्वर्णचतुः षष्ठिकलानि ॥ ३३

भागध्वनी गितूपा जित्वापयनु महध्वनी ॥ ३४ ॥ गभाजतन ॥ सूना
 ह्यामहिषिष्कुरु मन्त्रविष्णु महध्वना ॥ स्वर्गनशम्बूपूर्णनश्रा
 धनकस्त ॥ अनय ॥ ३५ ॥ मधनिस्तनादक ॥ मन्त्रस्तुतिषिष्कुरु
 किमन ॥ ३६ ॥ सूना ॥ मधनायाम्बूपूर्णनद्वितीयकस्त ॥ अनय
 ॥ ३७ ॥ यागभागीजतन ॥ सानस्तनतायनस्वकम ॥ धनयेपूने
 ॥ विद्याधना ॥ स्त्रापयनु तृतीयकस्त ॥ अनय ॥ ३८ ॥ समूदादक

पालेव नाग विजय वा ३९

१ ललितनागदववाद्य २

१ विहासनाग इन्द्रविवाद्य ३

२ हेनवनागमः सववाद्य ४

भजायास्त्रीस्त्रापयस्तुताकपाता॥ समागता॥ सागनादकपू॥
नदुर्धनकस्त॥ अनहि॥ ३॥ पद्मके॥ नादक॥ वानि॥ अपानि॥ पू
॥ नमपद्म॥ नदुर्धनकस्त॥ अनहि॥ ३॥ पद्मके॥ नादक॥ वानि॥ अपानि॥ पू
नहि॥ ३॥ निर्मनादकन॥ हिमवन्मन्त्रकेता॥ मूर्तिविष्णुपर्व
गा॥ निर्मनादकपू॥ नदुर्धनकस्त॥ अनहि॥ ३॥ पद्मके॥ नादक॥
सर्वगीर्धनपू॥ नदुर्धनकस्त॥ अनहि॥ ३॥ पद्मके॥ नादक॥
३ कंदाननागमः सववाद्य ४

२ वनालीनागमः सववाद्य ४

१ वसुनागमः सववाद्य ४

कुम्भवयः सफः खचना॥ ३॥ सनावनजः साना॥ वसवस्तुतिवि
ष्णुकस्त॥ अनहि॥ ३॥ पद्मके॥ नादक॥ वानि॥ अपानि॥ पू
॥ नमपद्म॥ नदुर्धनकस्त॥ अनहि॥ ३॥ पद्मके॥ नादक॥ वानि॥ अपानि॥ पू
मां धृतिशाय॥ विदका निगमावः सववाद्य ४॥ सानि
मो नतथ॥ सनावनजः साना॥ वसवस्तुतिवि
५४ केवल्यपतिपादिका॥ सनावनजः साना॥ वसवस्तुतिवि
४ धनूषीनागमः सववाद्य ४

३ हरेनवीनागदवविजयवाद्ये

तिष्ठति॥ यद्द्वन्द्वं सृष्ट्वा वृत्त्यन्तं मूर्तिं क्षमामूर्तिमिव च॥ अहं स म्वाहं
 सन्वापियच्च संयचनं मति॥ अचं नायचनं वापियद्वाद्यं यमवा
 द्ययं॥ तस्यैव स्थापयन् कुत्वीनवर्धनं द्यटनहि॥ ४३॥ ॥ ४४॥ तिस्र
 हा स्नानं विधाय॥ ॥ तगाहं गथावलिमुत्सृज्य॥ तगाहं पुगाहं
 पिभावाध्वयवसन्त्युत्तुगं॥ तगृह्णन्तु मया दत्तं वलिमर्चये
 साधितं॥ पूजितागं भूषाध्वं सिद्धिस्तु र्पितास्तु॥ देवभद

[illegible]

पातान् पूजय ॥ वेङ्कीर्णं गङ्गापतय नमः ॥ दौर्ध्रुपातय नमः ॥
 श्रीधिये नमः ॥ वावट्कनाथय नमः ॥ ६४ व्याघ्रयादिविदिक् ॥ म
 ॥ ६५ ॥ नत्तमसुपाय नमः ॥ पूर्वादिविदिक् ॥ श्रीकामदवाय ॥ वं
 सनाय नमः ॥ त्रिसुनस्येश ॥ श्रीसुस्येश ॥ दिगन्तनाथ ॥ त्रिमायाय
 नमः ॥ ६६ ॥ इत्यर्थः ॥ तद्वकास्यः ॥ स्वस्ति ॥ स्वाहा ॥ भुर्यै कर्णैः ॥ ६७ ॥
 र्यै ॥ साकधम्यै ॥ म ॥ ६८ ॥ वागीश्वर्यै ॥ वेङ्कीर्णं नत्तद्वानसगकि

गम्यतीमहृदविश्रुत्यारिः ॥ किंतिः ॥ सह ॥ पूजीय ॥ ह ॥ अ ॥ सु ॥ मूरिविस्तर्क ॥ अ ॥ ह ॥
 मूकाय द्वापनाथय नमः ॥ ६९ ॥ तिष्ठानपूजाविधय देव्याय नमः ॥ चाल
 य ॥ श्रीजी ॥ ७० ॥ धीपिपूत्ररगवतिचलश्चालयश्च पूजासयिप्रवि
 ष ॥ ७१ ॥ इत्युच्चाहा ॥ तगायत्र्यै वसु ॥ अजसमूलीयै सिन्धुनादिरिर्म
 धिगीपट्टवसु ॥ अ ॥ व ॥ अ ॥ तै ॥ अ ॥ सादिपा ॥ अ ॥ नि ॥ अ ॥ य ॥ पा ॥ क ॥ क ॥ पि ॥ स ॥ क
 स ॥ ७२ ॥ इत्युच्चापय ॥ ॥ ततः ॥ पतिपदिघटस्त्रापनविधिनाकू
 लकृहान् देव्यावामसूरि ॥ अ ॥ ति ॥ क ॥ सा ॥ त्म ॥ का ॥ न ॥ स्त्रा ॥ प ॥ य ॥ ॥ ॥

[illegible]

कामगिर्यालयमेजीगनाथामिकेन्द्रात्मकि० कामध्वनीद
वीथीपापू॥ वाम॥ श्री० सूर्यचक्रपू० गिरिपी० वषट्ठी०
नाथामिकेविष्णुसंग० किंवडं ध्वनीदेवीपापू॥ सी० स्त्री०
मचक्रजालध्वन पी० उड़ीगनाथामिकेवृक्षात्म ०
कि० रंगमातिनीदेवीपापू॥ ॥ मूलनेसर्वसिद्धिपदाय
कचक्रवाणवापपा० दू० वित्तपिगानकनोसगिपूनाम्या

धनिधी॥पा॥भ॥क॥भ॥ध॥ना॥द॥वी॥मा॥यु॥न॥झं॥ग॥ले॥व॥च॥॥सूर्य॥च॥क्र
 म्मि॥ता॥द॥वी॥जा॥स॥पी॥०॥नि॥वा॥सि॥नी॥॥विष्णू॥भ॥कि॥र्म॥हा॥द॥वी॥व॥ज॥ध॥नी
 न॥भा॥मु॥ग॥॥य॥ज॥लि॥॥ह्रीं॥ह्रीं॥सूर्य॥च॥क्र॥जा॥स॥ध॥न॥पी॥०॥ष॥ष्ठी॥भ॥ना
 ध॥मि॥क॥व॥ज॥ध॥नी॥द॥वी॥ह्रीं॥विष्णू॥भ॥कि॥४॥थी॥पा॥पू॥॥३॥क॥रं
 त॥पि॥ने॥न॥म॥॥ॐ॥या॥दि॥॥१२॥॥टं॥ज॥ना॥ये॥न॥म॥॥ॐ॥या॥दि॥॥१०
 ॥व॥सि॥॥या॥नि॥नू॥ड॥॥॥त॥त॥४॥स॥म॥क॥रा॥पू॥जा॥॥सो॥४॥च॥न्द्र॥म॥धु॥त

च॥क्र॥स॥ना॥य॥न॥म॥॥ध॥नी॥॥सि॥न्धू॥न॥पू॥रु॥स॥का॥भ॥वि॥यु॥र्वा॥द्रुं॥पि॥ता॥च
 नी॥॥पू॥रु॥का॥द्रु॥व॥ना॥ही॥ति॥पा॥भ॥क॥नो॥घ॥नी॥॥स॥म॥च॥क्र॥मि॥ता
 द॥वी॥पू॥रु॥पी॥०॥म॥ना॥ह॥ने॥॥व॥क्र॥भ॥कि॥र्म॥हा॥द॥वी॥र॥॥ग॥ध॥नी॥नि॥भा
 मु॥ग॥॥य॥ज॥लि॥॥सो॥४॥स्त्री॥स॥म॥च॥क्र॥पू॥रु॥गि॥नि॥ग॥द्रु॥न॥उ॥डु॥नी॥
 ना॥ध॥मि॥क॥शी॥र॥ग॥॥ह्रीं॥मा॥लि॥नी॥द॥वी॥व॥क्र॥ा॥त॥म॥भ॥कि॥४॥थी
 पा॥पू॥॥३॥॥भू॥भू॥म॥ता॥ये॥न॥म॥॥ॐ॥या॥दि॥॥१०॥॥क॥रं॥स॥क्षे॥न॥म॥॥

॥६६॥यादि१०॥वसि॥धनूमू॥ ॥ततोदव्याबामश्रीकस्तभ
 पूजा॥जुंकीसो॥सर्वगतोमयब्रह्मचक्रासनायनमः॥धन॥
 सूर्यचंद्रमिमयेकपी०निसयावालाकविम्बानु॥यादीबनु
 कसावतिसमूकटापीनरुनीसुन्दरी॥पा॥भक्तु॥मिश्रवा
 पविधुतीपूषापूहसुपनीनानादुषि॥रुषितामिकुसुमाना
 मीरुंवेन्दव॥आवाहनी॥महापद्मवनानकहकान॥नन्दवि

ग्रह॥सर्वरुतहितामातनप्रहिप्रनमः॥या॥सि॥जुंकीसो॥वुं
 सर्वगतोमयब्रह्मचक्रासनायनमः॥धन॥
 नन्दनाथत्मकेपनब्रह्मात्म॥कि॥श्रीपापू॥३॥षपीतायेनमः
 ॥६६॥यादि३॥अनिवृथेनमः॥६६॥यादि१६॥वसि॥काद्यम
 दा॥ ॥ततोदव्यादेकश्रीपापू॥जुंकीसो॥यानपी॥भयनमः॥
 जुंकात्मरूपी॥भयनमः॥क्रीजालधनपी॥भयनमः॥सो॥पूषा

ॐ श्रीं रंगमाहिनी देवी पापू ॥ शिखरु मूडा ॥ दौं दौं वौं वूं सः ॐ
जिताये नमः ॥ जयी ॥ ॐ अन्ननाये ॥ ॐ अपना जिताये ॥ ॐ उ
याये ॥ ॐ विजयाये ॥ ॐ अन्ननाये ॥ ॐ विजयाये ॥ ॐ कनकाये ॥
ॐ भवये ॥ वसि ॥ यानि मूडा ॥ ॥ खड्ग पूजा ॥ अस्ति विषमः ख
प्रसीदू धना इना सदा ॥ श्री गरी विजयये वधर्म धन स्रु
वच ॥ जगानि तव नामानि स्वयमुक्ता निवधसा ॥ न कर्तुं कृत्तु को न

गुगुनर्द्वामहः धनः ॥ स्नाहि ॥ श्री नरक देवतः ॥ जनादिनः ॥
पितापितामहा देवत्वं मां पातय सर्वदा ॥ नीलजी मूगसंका ॥ तीक्ष्ण
दक्षुद्धः ॥ धनः ॥ रावः ॥ दुष्टा मर्षः ॥ अति नः ॥ जामु ॥ धेवच ॥
ॐ यं यन धृता का जी हनः ॥ धम हि सा सूनः ॥ धागी दूधनाय सर्वा
यनः ॥ खप्राय नमः ॥ ॥ कृनिका ॥ सर्वायुधनाय धर्म नि
र्मिता सिपिना किना ॥ भूलायुधः ॥ दिनिष्ठः ॥ धत्वा मूहि यः हं शु